Shri Ram Stuti

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणम्।
नवकञ्ज-लोचन कञ्जमुख करकञ्ज पदकंजारुणम्॥

कन्दर्प अगणित अमित छवि नव नील नीरद सुन्दरं ।
पटपीत मानहुँ तडित रुचि शुचि नोमि जनक सुतावरं ॥२॥

भजु दीनबन्धु दिनेश दानव दैत्य वंश निकन्दनं ।
रघुनन्द आनन्द कन्द कोशल चन्द दशरथ नन्दनं ॥३॥

शिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अङ्ग विभूषणं ।
आजानु भुज शर चाप धर संग्राम जित खरदूषणं ॥४॥

इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रंजनं ।
मम् हृदय कंज निवास कुरु कामादि खलदल गंजनं ॥५॥

मन जाहि राच्यो मिलहि सो वर सहज सुन्दर सांवरो ।
करुणा निधान सुजान शील स्नेह जानत रावरो ॥६॥

एहि भांति गौरी असीस सुन सिय सहित हिय हरषित अली।
तुलसी भवानिहि पूजी पुनि-पुनि मुदित मन मन्दिर चली ॥७॥

॥सोरठा॥
जानी गौरी अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि ।
मंजुल मंगल मूल वाम अङ्ग फरकन लगे।

śrī-rāma-candra kṛpālu bhaju mana haraṇa bhava-bhaya dāruṇam
nava-kanja-locana kanja-mukha kara-kanja pada-kanja-aruṇam

श्री राम चंद्र कृ-पालू भज-मन हरण भव-भय दारु-णम।
नव-कंज लोचन कंज-मुख कर कंज पद कंजा-रु-णम ॥

kandarpa agaṇita amita chhavi nava nīla nīrada sundaram
paṭa-pīta māñahuṁ ṭaḍita ruchi śuchi nomi janaka-sutāvaram

कन्-दर्प अ-गणित अमित छवि नव नील नई-रद सुन-दरम।
पट-पीत मान-हूँ तडित रुचि शुचि नोमि जनक सुता-वरम ॥२॥

bhaju dīnabandhu dineśa dānava daitya vaṁśa nikandanam
raghunanda ānanda kanda kauśala chanda daśaratha nandanam

भजु दीन-बन्धु दिनेश दानव दैत्य वंश निकन्-दनम।
रघु-नन्द आनन्द कन्द कोशल चन्द दशरथ नन्-दनम ॥३॥

śira mukuṭa kuṇḍala tilaka cāru udāru aṅga vibhūṣaṇam
ājānu bhuja śara cāpa dhara saṅgrāma jita khara-dūṣaṇam

शिर मुकुट कुन्-डल तिलक चारु उदारु अंग वि-भूष-णम ।
आजानु भुज शर चाप धर संग्राम जित खर-दूष-णम ॥४॥

iti vadati tulasīdāsa śaṅkara śeṣa muni mana rañjanam
mama hṛdaya kanja nivāsa kuru kāmādi khaladala gañjanam

इति वद-ति तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रन्-जनम ।
मम् हृदय कन्ज निवास कुरु कामा-दि खल-दल गन-जनम ॥५॥

man jāhi rācyo milahi so vara sahaja sundara sāṁvaro
karuṇā nidhāna sujāna śīla sneha jānata rāvaro

मन जाहि राच्यो मिलहि सो वर सहज सुन्दर सांवरो ।
करुणा निधान सु-जान शील स्नेह जानत रा-वरो ॥६॥

ehi bhānti gaurī asīsa suna siya sahita hiy haraṣit alī
tulasī bhavānihi pūjī puni-puni mudit man mandir chalī

एहि भांति गौरी असीस सुन सिय सहित हिय हर-षित अली।
तुलसी भवानि-हि पूजी पुनि-पुनि मुदित मन मन्दिर चली ॥७॥

jānī gaurī anukūl siya hiy haraṣu na jāi kahi
mañjul maṅgal mūl vām aṅg pharakan lage

जानी गौरी अनु-कूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि ।
मन्-जुल मंगल मूल वाम अंग फरकन लगे।